विषय-सूची

पहला अध्याय—विषय प्रवेश

(१) राजस्थान की महत्ता :

(क) भौगोलिक ... ... ३—४

(ख) ऐतिहासिक ... ... ४—५

(ग) राष्ट्रीय एवं साहित्यिक ६

(२) राजस्थानी भाषा का अध्ययन :

(क) 'डिंगल' शब्द की व्युत्पत्ति ... ... ६—८

(ख) नामकरण—मरुभाषा, डिंगल एवं राजस्थानी ... ९

(ग) राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति ... ... ९—१२

(घ) प्राचीन, मध्यकालीन एवं अर्वाचीन राजस्थानी ... १२—१६

(३) राजस्थानी का चारणेतर साहित्य :

(क) राजपूत राजघराने का साहित्य ... ... १६—१८

(ख) जैन साहित्य ... ... १८—१९

(ग) ब्राह्मण साहित्य ... ... १९—२०

(घ) भाट साहित्य २०

(ङ) अन्य जातीय साहित्य २१

(च) संत साहित्य ... ... २१—२२

(छ) लोक साहित्य ... ... २२—२४

(४) चारण जाति का विशेष अध्ययन :

(क) 'चारण' शब्द की व्युत्पत्ति ... ... २४—२५

(ख) चारण जाति का उद्भव ... ... २५—२६

(ग) चारण जाति का मूल पुरुष ... ... २६—२७

(घ) समीक्षा ... ... २७—२८

(ङ) निष्कर्ष २८

(च) चारण जाति का विस्तार ... ... २८—३०

(छ) चारण जाति का धर्म ३०

(ज) चारण एवं राजपूत जातियों का पारस्परिक सम्बन्ध ... ३०—३२

(झ) पाश्चात्य चारण ... ... ३२—३३

(५) राजस्थानी भाषा एवं साहित्य पर किया शोध-कार्य :

(क) चारण साहित्य विषयक उपलब्ध सामग्री ... ३३—३७

(ख) चारण साहित्य की महत्ता ३७

(ग) चारण साहित्य का काल-विभाजन ... ... ३७—३९

दूसरा अध्याय—चारण साहित्य की पृष्ठभूमि (सन् ६५०-११५० ई०)

(१) संस्कृत कवि एवं उनकी कृतियां ... ... ४१—४७
(२) प्राकृत कवि एवं उनकी कृतियां ४७
(३) अपभ्रंश कवि एवं उनकी कृतियां ... ... ४७—४९
(४) राजस्थानी कवि एवं उनकी कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन ... ४९—७४

तीसरा अध्याय—प्राचीन काल (सन् ११५०-१५०० ई०)

(१) काल-विभाजन ७७
(२) राजनैतिक अवस्था :
(क) राजस्थान एवं केन्द्रीय सत्ता ... ... ७७—७९
(ख) प्रांतीय शासक एवं शासन-व्यवस्था ... ... ७९—८०
(३) सामाजिक अवस्था ८१
(४) धार्मिक अवस्था ... ... ८१—८२
(५) चारण साहित्य ... ... ८२—८३
(६) कवि एवं उनकी कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन :
(क) जीवनी-खण्ड ... ... ८३—९९
(ख) आलोचना-खण्ड—पद्य साहित्य
१. प्रशंसात्मक काव्य ९९–१०३
२. निन्दात्मक काव्य १०३–१०४
३. वीर काव्य १०४–१११
४. भक्ति काव्य १११–११२
५. शृङ्गारिक काव्य ११२
६. ऐतिहासिक काव्य ११२–११५
७. भाषा, छंद एवं अलंकार ११५–११७
(ग) गद्य साहित्य ११७–११८

चौथा अध्याय—मध्य काल, प्रथम उत्थान (१५००-१६५० ई०)

(१) काल-विभाजन १२१
(२) राजनैतिक अवस्था :
(क) राजस्थान एवं केन्द्रीय सत्ता १२१–१२३
(ख) प्रांतीय शासक एवं शासन-व्यवस्था १२३–१२५
(३) सामाजिक अवस्था १२५
(४) धार्मिक अवस्था १२६
(५) चारण साहित्य १२६–१२७
(३) कवि एवं उनकी कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन :

(क) जीवनी-खण्ड १२७–१६१

(ख) आलोचना-खण्ड—पद्य-साहित्य

१. प्रशंसात्मक काव्य १६१–१७३
२. निन्दात्मक काव्य १७३–१७५
३. वीर काव्य १७५–१९४
४. भक्ति काव्य १९५–२०४
५. शृंगारिक काव्य २०४–२०५
६. राष्ट्रीय काव्य २०५–२०६
७. शोक काव्य (मरसिया) २०६–२०८
८. सती माहात्म्य २०८–२०९
९. प्रकृति-प्रेम २०९–२१०
१०. ऐतिहासिक काव्य २१०–२११
११. भाषा, छन्द एवं अलंकार २११–२१३

पांचवां अध्याय—मध्य काल, द्वितीय उत्थान (सन् १६५०–१८०० ई०)

(१) काल-विभाजन २१७
(२) राजनैतिक अवस्था :
(क) राजस्थान एवं केन्द्रीय सत्ता २१७–२२०
(ख) प्रान्तीय शासक एवं शासन-व्यवस्था २२०–२२२
(३) सामाजिक अवस्था २२२–२२३
(४) धार्मिक अवस्था २२३–२२४
(५) चारण साहित्य २२४
(६) कवि एवं उनकी कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन :
(क) जीवनी-खण्ड २२५–२५४
(ख) आलोचना-खण्ड—पद्य-साहित्य
१. प्रशंसात्मक काव्य २५४–२६३
२. निन्दात्मक काव्य २६३–२६७
३. वीर काव्य २६७–२७९
४. भक्ति काव्य २७९–२८६
५. शृङ्गारिक काव्य २८६–२८९
६. रीति काव्य २८९–२९२
७. शोक काव्य (मरसिया) २९२–२९३
८. सती माहात्म्य २९३–२९४
९. प्रकृति-प्रेम २९४–२९६
१०. ऐतिहासिक काव्य २९६–२९९
११. भाषा, छन्द एवं अलंकार २९९–३०१
(ग) गद्य-साहित्य ३०१–३०९